सलामी के हकदार

प्रदीप कुमार उनियाल, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की।

शिक्षा का स्वरूप चाहे जैसा हो, उसके प्रति जागरूकता में लगातार वृद्धि हो रही है। क्या छात्र, क्या अभिभावक, सभी अच्छे अंक प्राप्त कर, अच्छे संस्थान में प्रवेश लेकर प्रगति की दौड़ में शामिल हैं और हमारी सरकारें उनके इस जज्बे को पहचान नहीं पा रही है। सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.ई. के परिणाम, इस बात की गवाही देते हैं कि आगे बढ़ने की दौड़ में अब बड़ी तेजी के साथ हमारा मध्य वर्ग भी शामिल हो रहा है। एक वक्त था जब 75 प्रतिशत अंक लाकर डिस्टिंक्शन प्राप्त करना बड़ी उपलब्धि होती थी। बहुत से स्कूलों में कई-कई वर्षो तक कोई भी छात्र प्रथम श्रेणी में पास नहीं होता था। लेकिन अब समय बदल गया है। सी.बी.एस.ई. ने अपने पंख दूर तक फैला दिये हैं फिर अन्य बोर्डो ने अपनी पुरानी परम्पराएं बदल दी हैं। पिछले कुछ वर्षों से 80 प्रतिशत से अधिक परीक्षाफल आ रहे हैं। उससे भी अधिक चकाचौंध करने वाले पब्लिक स्कूलों की अपेक्षा-साधनहीन सरकारी स्कूलों के गरीब व साधनहीन बच्चे आगे आ रहे हैं, लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूकता की पुष्टि होती है, ग्रामीण व छोटे कस्बे में रहने वाले मुनष्य को यह मालूम हो गया है कि प्रगति का राजमार्ग स्कूल-कालेजों से होकर ही गुजरता है इसलिए वे येन-केन-प्रकारेण शत्-प्रतिशत् अंक पा लेना चाहते हैं।

लड़कियां जो प्राचीन काल में समाज में उपेक्षित थी चूँकि इतिहास ने उनके साथ अन्याय किया था और वर्षो से शिक्षा से वंचित रखी गयी थी, इसलिए अब जब उनके हाथ मौका लगा है वे उसे गवाना नहीं चाहती और वह लगातार सफलता की ऊँची सीढ़ी चढ़ती जा रही हैं। प्रवेश परीक्षा में सफलता पाने वाले वे छात्र सचमुच प्रतिभावान है, वे तो साधुवाद के पात्र हैं ही, वे छात्र भी कम साधुवाद के पात्र नहीं जो ट्यूशन पढ़ कर, रात-दिन मेहनत करके लगातार आगे बढ़ रहे हैं। अभावों में रहकर भी टॉप करने वालों को जिन्दगी की दौड़ में कोई पछाड़ नहीं सकता। जो छात्र विकट परिस्थितियों में रहकर भी आगे बढ़ने का माद्दा रखते हैं वे सलामी के हकदार हैं।

****